॥ श्री ॥

कवि आढा दुरसाजी कृत हिंदुपति श्रीमान् महाराजाधिराज महाराणा जी श्री १०८ श्री प्रतापसिंहजी की विरदछिहत्तरी.

जिसको

जोधपुर राज्यके भूतपूर्व मेंबर कौन्सिल
और बख्शी जागीर
सिंघवी बछराजजीने

दाधीच आसोपा पंडित बलदेवात्मज
पंडित रामकर्ण-श्यामकर्णके
प्रतापप्रेस जोधपुर में छपवाकर प्रसिद्ध करी.

भूमिका
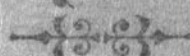
हिन्दुपति श्रीमान् महाराजाधिराज महाराणाजी श्री १०८ श्री प्रतापसिंहजीने हिन्दु धर्मकी रक्षाके निमित्त अकबर जैसे महाप्रतापी बादशाह से बैर बांधा(?)

(१) महाराणा प्रतापसिंहजीको बादशाह अकबर की आधीनता स्वीकारने से बड़ी नफरत थी और वे अकबरको अपने मुखसे कभी बादशाह नहीं कहते थे, बादशाह के वास्ते वे सदा "तुर्क" शब्दका प्रयोग करते थे कहते हैं कि एक दिन बादशाहने अपने दर्बार में बैठे हुए कहा कि महाराणा प्रतापसिंहजीने, हमको बादशाह कहना स्वीकार करलिया है, इसपर बीकानेर वाले पृथ्वीराजजी ने, जो वहां पर उपस्थित थे, बादशाहसे अर्ज किया कि यह बात किसी ने झूंठ ही मालूम कर दी होगी, क्योंकि महाराणा प्रतापसिंहजी अपने प्रणके ऐसे सच्चे हैं कि अपने जीतेजी उसको नहीं छोड़ेंगे. बादशाह ने कहा कि यदि इस बात में तुमको शक हो तो महाराणा से लिखकर दर्याफ्त करलो. इस पर पृथ्वीराजजी ने ये दो दोहे लिखकर महाराणा के पास भेजे—

पातळ जो पतशाह, बोलै मुखहूंता बयण।
मह्र पछम दिश मांह, ऊगे कासप राव उत ॥ १ ॥

तजी उनसे नाराज होकर बादशाह अकबरके पास
चले गये तो बादशाह ने सिरोही के राव सुल्तानजीका
आधा राज उनको देदिया. लेकिन् राव सुल्तानजी से
बखेड़ा होजाने पर जगमालजी सिरोही छोड़ बादशा-
हके पास चले गये; बादशाहने उनकी सहायताके लि-
ये जोधपुरके राव चन्द्रसेनजीके बेटे राव रायसिंहजी
आदि को फौजके साथ सिरोही पर भेजा, संवत्
१६४० कार्तिक सुदी ११ के दिन राव सुल्तानजी से
उनकी लड़ाई हुई, जिसमें शाही फौजकी हार हुई,
और रायसिंहजी, जगमालजी व कितनेही दूसरे आ-
दमी मारे गये, इस लड़ाईमें कवि दुरसाजी भी सिरोही
की सेना में रहकर लड़े थे. इस लड़ाईके बाद जोधपुर
की गद्दी पर मोटे राजा उदयसिंहजी बैठे, फिर बाद-
शाह अकबरने जाम बेग, मोटे राजा उदयसिंहजी और
महाराणा प्रतापसिंहजीके भाई सगरजीको बड़ी सेना
के साथ सिरोही पर भेजा, उनके साथकी लड़ाई में
राव सुल्तानजीके कितने ही आदमी मारेगये, कवि
दुरसाजी और कई दूसरे घायल हुए और रावजी का

पहाड़ों में शरण लेना पड़ा जब सगरजी वगैरह अपने घायल राजपूतोंको उठाने और शत्रु के जखमियों को मारने लगे उस समय कवि दुरसाजीको घायल देख सगरजीने कहा, कि यह भी देवड़ोंका कोई सर्दार है इसको भी दूध पिलाना (मारना) चाहिये, इसपर दुरसाजीने कहा कि मैं चारण हूं और राजपूतोंका यह धर्म नहीं है, कि चारणको मारे. इसपर सगरजीने कहा कि तुम चारण हो तो यह समरा देवड़ा जो इस लड़ाईमें बड़ी वीरता के साथ काम आया है उसकी प्रशंसामें एक दोहा कहो. जिसपर उन्होंने तत्काल यह दोहा कहा;—

धर रावां जश डूँगरां, ब्रद पोतां शत्रु हांण ॥
समरे मरण सुधारियो, चहु थोकां चहुवांण ॥ १ ॥

यह सुनते ही सगरजी बड़े सन्मानके साथ उनको पालकीमें बिठलाकर अपने डेरेपर लेगये और वहांपर उनके घावोंका इलाज करवाया गया.

विक्रमी संवत् १६४३ में मोटे राजा उदयसिंहजीने चारणोंके गांवोंपर जब्ती भेजी जिससे कितने ही चारण तागा (आत्मघात) करके मरगये, उसवक्त दुरसा-

जीने भी अपने गलेमें छुरी मारी थी.

ऐसा प्रसिद्ध है कि राव सुल्तानजीके साथकी दूसरी लड़ाईके बाद दुरसाजीका दिल्ली जाना हुआ, और बादशाह अकबरने उनकी कविता से प्रसन्न होकर उनकी बहुत कुछ इज्जत (१) बढ़ाई.

सम्वत १६५३ के माघ शुदि ११ को महाराणा प्रतापसिंहजी का स्वर्गवास हुआ, जिसकी खबर सुन बादशाह अकबर ने बहुत फिक्र किया, और चुप होरहा, जिसपर दुरसाजी ने नीचे लिखी हुई छप्पय कही, जिसका जिक्र सुन बादशाह ने उनके मुखसे वह छप्पय सुनी और इनआम देकर कहा कि इस कविने यथार्थ कहा है.

अश लेगो अणदाग, पाग लेगो अण नामी ।
गो आड़ा गवड़ाय, जिको बहतो धुर वामी ॥
नवरोजे नह गयो, न गो आतशाँ नवल्ली ।
न गो झरोखा हेठ, जेठ दुनियाण दहल्ली ॥

(१) कहते हैं कि दुरसाजी को बादशाह ने अपने दर्बार में बैठने की इज्जत भी बख्शी थी.

गहलोत राण जीतीगयो, दहण मूंद रसणा हसी।
नीसास मुक भरिया नयण, तो मृत शाह प्रतापसी॥

आबू पर्वतपर अचलेश्वर के मन्दिर में चारणों की दो पीतल की मूर्तियें हैं, जिनके नीचेके लेखसे पाया जाता है कि वे सम्वत् १६८६ में दुरसाजीने बनाई थीं.

दुरसाजीकी बनाई हुई महाराणा प्रतापसिंहजीके विषय की बहुतसी कविता मिलती है, जिसमें विरद छिहत्तरी मुख्य है, जिसकी एक हस्त लिखित पुस्तक लाळस चारण कवि उमरदानजी की मारफत प्राप्त हुई जिसके अनुसार यह पुस्तक छपवाई गई है, उक्त पुस्तकमें कई स्थलों पर अशुद्धियें थीं जिनको जहां तक होसका शुद्ध किया है, तोभी कहीं २ अशुद्धियें (१) रह गई हैं, जिनके लिये पाठकोंसे क्षमा चाहता हूं.

---

(१) विरदछिहत्तरी में कितनेक सोरठे उलट पुलट और शायद कुछ क्षेपक भी हो तो आश्चर्य नहीं, पुस्तक एक ही मिला जिससे दूसरे पुस्तकोंसे मिलान न होसका नीचे लिखा हुआ सोरठा भी दुरसाजीका ही बना सुनाजाता है, परन्तु इस पुस्तकमें वह पाया नहीं गया.

पोह गोथळिया पास, आळूबा अकबर तणी।
राणा खमे न रास, प्रबळो सांड प्रतापसी॥ १॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

श्रीमान् महाराजाधिराज महाराणाजी श्री १०८ श्री हिन्दवासूरज प्रतापसिंहजी की बिरद छिहत्तरी.

॥ सोरठा ॥

अलख पुरष आदेस, देश बचाय दयानिधे ॥
बरनन करूं बिसेस, सुहृद नरेस प्रतापसी ॥ १ ॥
गढ ऊंचौ गिरनार, नीचौ आबू ही नहीं ॥
अकबर अघ अवतार, पुन अवतार प्रतापसी ॥२॥
कळजुग चलै न कार, अकबर मन अंजस घुँही॥
सतजुग सम संसार, परगट राण प्रतापसी ॥ ३ ॥
अकबर गरब न आंण, हिंदू सह चाकर हुवा ॥
दीठौ कोइ दिवाण, करतौ लटका कटहड़ै ॥ ४ ॥

सुणतां अकबर शाह, दाह हिये लागी दुसह ॥
बिलमल्ला बदराह, एक राह करदूं अवश ॥ ५ ॥
मन अकबर मज़बूत, फूट हिन्दवां बेफिकर ॥
काफ़र कोम कपूत, पकड़ौ रांणा प्रतापसी ॥ ६ ॥
अकबर कीना याद, हिन्दू नृप हाजर हुवा ॥
मेदपाट मरजाद, पगां न लगौ प्रतापसी ॥ ७ ॥
म्लेच्छां आगल माथ, नमै नहीं नरनाथरौ ॥
सो करतव्य सनाथ, थारौ रांणा प्रतापसी ॥ ८ ॥
बुवा बहेरा बाट, बाट जिकण बहणौ बिसद ॥
खाग त्याग खत्रवाट, पूरौ रांणा प्रतापसी ॥ ९ ॥
चितवै चित चीतोड़, चिता जलाई सो चतुर ॥
मेवाड़ो जगमोड़, पावन पुरुष प्रतापसी ॥ १० ॥
कदै नमावै कंध, अकबर ढिग आवै न ओ ॥
सूरज बंश सँबंध, पाळै रांणा प्रतापसी ॥ ११ ॥

अकबर कुटिल अनीत, और विटल सिर आदरै ॥
रघुकुल उत्तम रीत, पालै रांणा प्रतापसी ॥१२॥
तोपे हिन्दू लाज, सगपण रोपै तुरकसूं ॥
आरज कुलरी आज, पूंजी राणा प्रतापसी ।१३।
अकबर पथर अनेक, के भूपति भेला किया ॥
हाथ न लागौ हेक, पारस रांणा प्रतापसी ॥१४॥
साँगो धरम सहाय, बाबरसूँ भिड़ियो बिहस ॥
अकबर कदमाँ आय, पड़ै न राणा प्रतापसी ।१५।
आपै अकबर आंण, थाप उथापै औ थिरा ॥
बापै रावल बांण, तापै रांणा प्रतापसी ॥ १६ ॥
सुखहित स्याल समाज, हिन्दू अकबर बस हुवा॥
रोसीलो मृगराज, पजै न रांणा प्रतापसी ॥ १७॥
अकबर कूट अजांण, हियाफूट छोडै न हठ ॥
पगां न लागण पांण, पणधर रांणा प्रतापसी ।१८।

है अकबर घर हाण, डांण ग्रहे नीची दिसट ॥
तजे न ऊंची तांण, पौरस रांण प्रतापसी ॥१९
जांणै अकबर जोर, तौ पण तांणै तौर तिड़ ।
आ बलाय है ओर, प्रसणां खोर प्रतापसी ॥२०
अकबर हियै उचाट, रात दिवस लागी रहै ॥
रजवट वट समराट, पाटप रांण प्रतापसी ॥२१
अकबर मारग आठ, जवन रोक राखी जगत।
परम धरम जश पाठ, पढियौ रांण प्रतापसी ।२२
अकब्बर समँद अथाह, तिहँ डूबा हिन्दू तुरक
मेवाड़ौ जिण माँह, पोयण फूल प्रतापसी ॥२३
अकबरियै इक वार, दागल की सारी दुनी ॥
अण दागल असवार, रहियौ रांण प्रतापसी ।२४
अकबर घोर अँधार, ऊंघांणा हिन्दू अवर ॥
जागै जग दातार, पौहरै रांण प्रतापसी ॥ २५ ।

जग जाडा जूँझार, अकबर पग चांपै अधिप ।
गो राखण गुंजार, पिँडमैं रांण प्रतापसी ॥२६॥
अकबर कनै अनेक, नम नम नीसरिया नृपति।
अनमी रहियो एक, पुहुमी रांण प्रतापसी ।२७।
करै खुशामद कूर, करै खुशामद कूकरा ॥
दुरस खुशामद दूर, पुरुष अमोल प्रतापसी ।२८।
अकबर जङ्ग उफांण, तंग करण भेजै तुरक ॥
गंगावत रिढ रांण, पांण न तजै प्रतापसी ।२६।
हल्दीघाट हरोल, घमँड उतारण अरिघडा ॥
आरण करण अडोल, पहुँच्यो रांण प्रतापसी ३०
थिर नृप हिन्दूथांन, लातरगा मग लोभ लग ॥
माता भूमी मांन, पूजी रांण प्रतापसी ॥ ३१ ॥
सेलां अणी सिनांन, धारा तीरथमैं धसै ॥
देण धरम रण दांन, पुरट शरीर प्रतापसी ॥ ३२॥

ठग अकबर दल ठांगा, अग अग झगड़ं आथड़े
मग मग पाड़ै मांगा, पग पग रांगा प्रतापसी ३३
दिल्ली हूँत दुरूह, अकबर चढियो एक दम ॥
रांगा रसिक रगा रूह, पलटै केम प्रतापसी ।३४।
चित्त मरगा रगाँ चाय, अकबर आधीनी बिना ॥
पराधीन दुख पाय, पुनि जीवै न प्रतापसी ।३५।
तुरक हिन्दवाँ ताँगा, अकबर जायो एकठा ॥
म्लेच्छां गालगा माँगा, पांगा कृपांगा प्रतापसी ३६
गोहिल कुल धन गाढ, लेवगा अकबर लालची ॥
कौडी दै नह काढ, पगा दृढ रांगा प्रतापसी ।३७।
अकबर मच्छ अयांगा, पूँछ उछालगा बल प्रबळ
गोहिल वत गहरांगा, पाथोनिधी प्रतापसी ।३८।
नित गुधलावगा नीर, कुंभी सम अकबर क्रमै ॥
गोहिल रांगा गँभीर, पगा गुधलै न प्रतापसी ३९

उडै रीठ अणपार, पीठ लगा लाखां प्रसण ॥
बेढीगार बकार, पैठो उदयाचल पतौ ॥ ४० ॥
अकबर दल अप्रमांण, उदैनयर घेरै अनय ॥
खागां बल खूमांण, साहां दलण प्रतापसी ४१
देबारी सुरद्वार, अड़ियौ अकबरियौ असुर ॥
लड़ियो भड़ ललकार, पौलां खोल प्रतापसी ४२
रोके अकबर राह, ले हिन्दू कूकर लखां ॥
बीभरतौ बाराह, पाड़ै घणां प्रतापसी ॥ ४३ ॥
देखे अकबर दूर, घेरै दै दुसमण घड़ा ॥
सांगां हर रण सूर, पैर न खिसै प्रतापसी ।४४।
अकबर तड़फै आप, फतै करण च्यारूं तरफ ॥
पण रांणौ परताप, हाथ न चढै हमीर हर ।४५।
अकबर किला अनेक, फतै किया निज फौजसूं
अकल चलै नह एक, पाधर लड़ै प्रतापसी ।४६।

दुबिधा अकबर देख, किया विधसूं घायल करे
पमगा ऊपर पेख, पाखर रांग प्रतापसी ॥४७॥
हिरदे ऊणा होत, सिर अकबर घूणा सदा ॥
दिन दूणा देसोत, पूणा व्हे न प्रतापसी । ४८ ।
कलपे अकबर काय, गुण पूंगीधर गोड़िया ॥
मिणधर छाबड़ मांय, पड़े न रांग प्रतापसी ।४९।
मांहि दाबणा मेवाड़, राड़ चाड़ अकबर रचे ॥
बिखे विखायत बाड, पृथुल पहाड़ प्रतापसी।५०
बँधियौ अकबर वैर, रसत गैर रोकी रिपू ॥
कन्द मूल फल कैर, पावै रांग प्रतापसी ।५१।
भागे सागे भाम, अमृत लागे ऊंमरा ॥
अकबर तल आरांम, पेखै जहर प्रतापसी ।५२।
अकबर जिसा अनेक, आहव अड़े अनेक अरि
असली तजे न एक, पकड़ी टेक प्रतापसी ।५३।
लांघण कर लंकाल, सादूलौ भूखौ सुवै ॥

कुलवट छोड कृपाळ, पैंड न देत प्रतापसी ।५४।
अकबर मैंगळ अच्छ, मांझळ दळ घूमै मसत ॥
पंचानन पलअच्छ, पटकै छड़ा प्रतापसी ।५५।
दन्ती दलसूं दूर, अकबर आवै एकलौ ॥
चौड़ै खल चकचूर, पळमैं करै प्रतापसी ॥५६॥
चितमैं गढ चीतोड़, रांणारै खटकै रयण ॥
अकबर पुनरौ ओड़, पेलै दौड़ प्रतापसी ॥ ५७॥
अकबर करै अफंड, मद प्रचंड मारग लगै ॥
आरज भाण अखण्ड, प्रभुता रांणा प्रतापसी।५८।
घटमूं ओघट घाट, घसियौ अकबरियै घणौ ॥
इल चंनणा उग्रवाट, परमल उठी प्रतापसी ।५९।
अकबर जतन अपार, रात दिवस रोकण करै ॥
पूगा समदां पार, पंगा रांणा प्रतापसी ॥ ६० ॥
बडी विपत सह बीर, बडी कीत खाटी बसू ॥
धरम धुरंधर धीर, पौरस धिनौ प्रतापसी॥६१॥

वसुधा कियौ विख्यात, समरथ कुळ सीसोदियां।
रांणा जसरी रात, प्रगट्यौ भलां प्रतापसी ।६२।
जिणरौ जस जग मांय, जिणरै जग धिन जीवणौ
नेड़ौ अपजश नांय, पण धर धिनौ प्रतापसी ६३
अजरामर धन एह, जश रह जावै जगतमैं ॥
दुख सुख दोनूँ देह, सुपन समांन प्रतापसी ।६४।
अकबर जासी आप, दिल्ली पासी दूसरा ॥
पुनरासी परताप, सुजस न जासी सूरमा ।।६५।।
सफळ जनम सुदतार, सफळ जनम जग सूरमां।
सफल जोग जगसार, पुर त्रय प्रभा प्रतापसी ६६
सारी बात सुजांण, गुणसागर गाहक गुणां ॥
आयोड़ो अवसांण, पांतरियै न प्रतापसी ।६७।
छत्रधारी छत्र छांह, धरम धाय सोयो धरा ॥
बांह गहधारी बांह, परत न तजै प्रतापसी ।६८।
अंतिम एह उपाय, विश्वंभर न विसारियै ॥

साथे धरम सहाय, पळ पळ रांण प्रतापसी।६९।
मनरी मनरै मांय, अकबररै रहगी अकस ॥
नर वर करियै नांय, पूगी रांण प्रतापसी ॥७०॥
औ जो अकबर राह, सैंधव कुंजर सांवठा ॥
बांसै तो बहताह, पिंजर थया प्रतापसी ॥ ७१ ॥
अकबरियौ हत आस, अंबखास झांखै अधम ॥
नांखै हियै निसास, पास न रांण प्रतापसी ।७२।
मनमैं अकबर मोद, कलमां विच धारै न कुट ॥
सुपनामैं सीसोद, पलैं न रांण प्रतापसी ॥७३॥
चारण वरण चितार, कारण लख महिमा करी॥
धारण कीजे धार, परम उदार प्रतापसी ॥७४॥
आभा जगत उदार, भारतवर्ष भवांन भुज ॥
आतम सम आधार, पृथवी रांण प्रतापसी॥७५।
कथी प्रार्थना कीन, पंडित हुं न प्रवीणपद ॥
ऊरसौं आढो दीन, प्रभु तव शरण प्रतापसी ।७६।